सत्यनिष्ठा एवं राजयोग का अभ्यास ही सुप्रशासन का आधार- ब्र.कु. आशा

मुख्य अतिथि के साथ सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. हरीश, ब्र.कु. गायत्री, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. अवधेश, ब्र.कु. राजू व अन्य। सभा में प्रशासनिक सेवाओं से जुड़े प्रबुद्धजन।

भोपाल। सत्यनिष्ठा, परोपकार जैसे गुणों का ज्ञान मनुष्य को बाल्यकाल से ही मिलता है। बचपन से ही नैतिक एवं दिव्य गुणों की अवधारणा मनुष्य को सिखाई जाती है। एक भी व्यक्ति अछूता नहीं जिसे सत्यनिष्ठा एवं परोपकार का ज्ञान न मिला हो। परंतु आज के तमोप्रधान वातावरण में लोगों की मानसिकता बदल गई है, वे सत्यनिष्ठ होने से डरते हैं। सत्यनिष्ठा, परोपकार एवं राजयोग का अभ्यास ही सुप्रशासन का आधार है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के सेवा प्रभाग की चेयरपर्सन ब्र.कु. आशा ने `एक दिवसीय राष्ट्रीय प्रशासक सम्मेलन' के उद्घाटन समारोह में व्यक्त किये।

मध्यप्रदेश में प्रशासकों एवं अधिकारियों के जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाकर सुप्रशासन की स्थापना करना ही सम्मेलन के आयोजन का उद्देश्य है। - ब्र.कु. अवधेश।

प्रशासक वर्ग पिछले 30 वर्षों से कार्यशालाओं के माध्यम से प्रशासनिक क्षेत्र से जुड़े लोगों में नैतिक एवं आध्यात्मिक जागृति लाने का कर रहा है कार्य।- ब्र.कु. हरीश,मुख्यालय संयोजक।

किसने क्या कहा

प्रथम खुले सत्र में

दक्ष प्रशासन हेतु सटीक निर्णय क्षमता की आवश्यकता है। और यह निर्णय क्षमता निर्भयता व पारदर्शिता से आती है। -राज्य सूचना आयुक्त एच.एल. त्रिवेदी।

द्वितीय खुले सत्र में

संबंधों में पारदर्शिता द्वारा नेतृत्व का पुनर्जीवन विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान समय जीवन इतना बनावटी हो गया है कि नकारात्मक सोचना स्वाभाविक लगता है, जबकि सकारात्मक सोचने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना पड़ता है। पारदर्शिता का सही अर्थ अंदर-बाहर एक समान होना है। - ब्र.कु. सरला,कार्यपालक सदस्य, प्रशासक वर्ग,मुम्बई

नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना से ही सर्व समस्याओं से मुक्त हो सकते हैं और स्वतः ही संबंधों में पारदर्शिता व विश्वास झलकने लगेगा। - ब्र.कु. शारदा, कार्यपालक सदस्य,प्रशासक वर्ग,मैसूर।

तृतीय खुले सत्र में

राजयोग का अभ्यास करने से मेरे अंदर सदा यह जागृति बनी रहती है कि मैं जो भी निर्णय ले रहा हूँ वह क्यों ले रहा हूँ। इससे मेरा जीवन द्वंद्व एवं उलझनों से मुक्त हो गया। - सुनील गिरधर,क्षेत्रीय प्रमुख,डी.सी. बैंक।

बिना नैतिकता के अधिकारों के प्रति जागरुकता अधिकारों के दुरुपयोग की ओर ले जा सकती है। - ब्र.कु. सुनीता, सदस्य,प्रशासक वर्ग,होशंगाबाद।

हम क्या हैं, हम क्यों हैं, हम क्या करें, यह जानने से जीवन में प्राप्त होने योग्य सब कुछ प्राप्त होता है। यही जीवन का सफल सूत्र है। लीडर वह है जो लैडर बन जाए। - सूरज भान सोलंकी,पूर्व सांसद।

आध्यात्मिकता द्वारा सुप्रशासन के सभी आयाम साकार किए जा सकते हैं। - सीताराम मीणा,पीठासीन अधिकारी, श्रम न्यायालय,आगरा।

समापन सत्र का कुशल संचालन शिक्षा प्रभाग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. किरण ने किया।

महाशिवरात्रि त्योहार पर लोगों के उद्गार

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए पंडित ध्रुव घोष, जोय गायकवाड़, डॉ. सुनील, ब्र.कु. निहा व अन्य अतिथिगण।

मुम्बई-दादर। महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें शिवरात्रि पर्व का महत्व एवं राजयोग मेडिटेशन पर भरपूर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं:-

- `ॐ' के अंतिम स्वर `म' की ध्वनी में इतनी शक्ति है जो हमें गहन शांति में स्थित कर उस परमशक्ति में एकाग्र करता है। संगीत के माध्यम से हम परमात्मा से जुड़कर स्वयं के शक्ति स्वरूप को जान सकते हैं। - पंडित ध्रुव घोष,ग्रेमी अवॉर्ड से सम्मानित।
- राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से हम अपना मानसिक संतुलन बनाये रख सकते हैं और उससे कई सारी समस्याओं को हल भी कर सकते हैं। - जोय गायकवाड, सेवानिवृत्त ए.सी.पी.।
- हम डॉक्टर्स को भी मरीजों के जाँच के दौरान डिप्रेशन व मानसिक थकावट का सामना करना पड़ता है। राजयोग मेडिटेशन की मदद से हम अपना मानसिक संतुलन बनाकर इसे अच्छी तरह से निभा सकते हैं। - ब्र.कु. डॉ. सुनिल,प्रसिद्ध सर्जन।
- राजयोग मेडिटेशन ही एकमात्र माध्यम है जो दैनिक जीवन में परिस्थितियों का सामना करने व मनोबल बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। - ब्र.कु. निहा।

मूल्य शिक्षा से बनेगा नया भारत – डॉ. राव

गीतांजली इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल स्ट्डीज़ के साथ एम.ओ.यू. सेरिमनी

शांतिवन। हमारा उद्देश्य केवल पढ़ाने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि एक अच्छा इंसान भी बनाना होना चाहिए। यहाँ जो शिक्षा मुझे मिली है, वही शिक्षा यदि 18 वर्ष के बच्चों को मिल जाए तो हम एक नया भारत बना सकते हैं जहाँ हर कोई सुख, शांति और आनंद से जीवन व्यतीत कर सकेगा। उक्त विचार गीतांजली इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल स्टडीज़,उदयपुर के प्रिन्सीपल डॉ. एम. वेणुगोपाल राव ने ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर में आयोजित एम.ओ.यू. कार्यक्रम में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि आज हम ब्रह्माकुमारी संस्था के साथ एक नई दिशा में आगे बढ़ रहे हैं जहां हमारे कॉलेज के विद्यार्थी भी आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण कर पाएंगे।

गीतांजली इंस्टीट्यूट के डीन रिसर्च एंड डेवलपमेंट राजीव माथुर ने कहा कि जी.आई.टी.एस. उदयपुर एवं ब्रह्माकुमारीज़ के बीच में जो एम.ओ.यू. किया गया है वह अध्यात्म और शिक्षा का संगम है। आज का युग चुनौती का युग है जो हमें मूल्य परक शिक्षा को आगे ले जाने से रोक रहा है। **हमने एक थॉट लैब खोलने का संकल्प लिया है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी अपने संकल्पों के प्रभाव का अध्ययन कर सकेगा।**

फाइनेंस कंट्रोलर बाबूलाल जांगीर ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्य की शिक्षा द्वारा ही विद्यार्थियों में बढ़ती असामाजिक गतिविधियों को रोकने में सफल होंगे।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर की निदेशिका ब्र.कु. डॉ. निर्मला ने कहा कि प्राचीन शिक्षा की पद्धति जहां स्टूडेंट का गुरु के प्रति बहुत ही सम्मान भाव था उसे पुनः स्थापित करना होगा। शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि मूल्य हमें सिम्पल रहकर रॉयल बनने की प्रेरणा देता है। आज कोई भी विश्वविद्यालय ऐसा नहीं है जिसमें अवगुणों को जीतने की शिक्षा दी जाती हो।

उदयपुर सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. रीटा ने कहा कि यहाँ सिर्फ वैल्यूज़ की शिक्षा ही नहीं दी जाती है बल्कि इसके साथ ही दीक्षा भी दी जाती है। जब शिक्षक स्वयं में वैल्यूज़ को धारण करेगा तो स्टूडेंट उसके वैल्यूज़ को देखकर ही ग्रहण कर लेगा। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.कु. मुकेश ने किया। कार्यक्रम के अंत में आमंत्रित अतिथियों को शॉल व मोमेंटो भेंटकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ. एम. वेणुगोपाल राव। मंचासीन हैं ब्र.कु. रीटा, ब्र.कु. शीलू, डॉ. निर्मला व ब्र.कु. मृत्युंजय।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएवल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 10th April 2016
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।